1

परमेश्वर की मंशा के लोग

''ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए। उस सनातन मंशा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी'' (इफिसियों 3:10, 11)।

पवित्र शास्त्र की छोटी सी बात का अर्थ प्राय: बहुत बड़ा होता है। उदाहरण के लिए, ''उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार'' (इफिसियों 1:7) सात शब्दों के लिए यह बात सत्य है। इस वाक्यांश में उस क्षमा की बात पूरी होती है जिसके बारे में पौलुस लिख रहा था। यह वाक्यांश हमें बताता है कि यदि परमेश्वर के पास अनुग्रह की कमी होती, तो हम अपने पापों को ''दूर करने'' के मामले में उससे अधिक उम्मीद नहीं कर सकते थे। परन्तु यदि वह अनुग्रह में धनी है, जिसकी पुष्टि पौलुस करता है, तो हम उससे जो हमारे सब अपराधों को छिपा सकता है बहुतायत में क्षमा पाने की अपेक्षा कर सकते हैं। यदि कोई निर्धन व्यक्ति अपने धन ''में से'' या ''के अनुसार'' दान दे तो हम बहुत कम उपहार की उम्मीद रखेंगे, क्योंकि निर्धन व्यक्ति के पास देने के लिए होता ही कम है। लेकिन यदि कोई धनी व्यक्ति अपने धन ''में से'' या ''के अनुसार'' दे तो हमें देने की उसकी क्षमता के हिसाब से बहुत सा और अत्यधिक धन मिलने की उम्मीद होगी। पौलुस ने यह समझाते हुए कि परमेश्वर की क्षमा ''उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार'' है, इसी बात पर ज़ोर दिया था। उसके शब्दों में हमारे लिए आश्वासन है कि अनुग्रह में धनी होने के कारण, परमेश्वर उस पर विश्वास करने वालों को क्षमा देने में सम्पूर्ण और बहुतायत से देता है।

बाइबल के छोटे से वाक्य या वाक्यांश का अर्थ इतना बड़ा होने की बात हमारे सामने इस सच्चाई को लाती है कि कलीसिया के बारे में विचार करते हुए हमें इफिसियों 3:11 के ''उस सनातन मंशा'' के तीन शब्दों को अपने विचार से निकलने नहीं देना चाहिए। इफिसियों के नाम पौलुस की पत्री के प्रमुख वाक्य में परमेश्वर के उद्देश्य का विशेष महत्व है:

> ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए। *उस सनातन मंशा* के

अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। जिस में हम को उन पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है (इफिसियों 3:10-12)।

परमेश्वर की सुन्दर योजना से जुड़ा कोई भी विचार निश्चित रूप से सावधानीपूर्वक और सोच समझकर जांच करने की मांग करता है। नये नियम के इन तीन शब्दों से अधिक महत्व शायद किसी और शब्द का न मिले।

यदि कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा का पूरा होना है, जैसा कि पौलुस ने कहा, तो कलीसिया के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। पौलुस ने कलीसिया का वर्णन उस माध्यम के रूप में करके जिससे परमेश्वर की सनातन मंशा पूरी होती है, कलीसिया की प्रकृति के बारे में बता दिया जो न तो भुलाया जा सकता है और न ही उसकी किसी के साथ तुलना है।

इस वाक्यांश पर प्रार्थनापूर्वक और विश्लेषण करते हुए विचार करें। परमेश्वर की सनातन मंशा के पूरा होने के रूप में कलीसिया की पहचान से कलीसिया की प्रकृति के बारे में हमें क्या पता चलता है?

इसमें इसके डिज़ाइन का ऐलान है

''उस सनातन मंशा'' का अभिप्राय कलीसिया के लिए ईश्वरीय नमूना अर्थात पवित्र अभिप्राय है। हमें इस प्रश्न का कि ''कलीसिया की मंशा अर्थात उद्देश्य क्या है?'' यह उत्तर देना चाहिए कि कलीसिया परमेश्वर के ईश्वरीय उद्देश्य का लागू होना है।

पाप से भरी मनुष्यजाति के छुटकारे के लिए यीशु की मृत्यु संसार की सृष्टि से पहले ही पता थी, ठहराई गई थी और उसकी योजना बनाई गई थी। पतरस लिखता है, ''तुम्हारा छुटकारा चान्दी, सोने अर्थात नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया था'' (1 पतरस 1:18-20)। परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर, यीशु ने हमें परमेश्वर के पुत्र बनाने के लिए अपनी देह और अपना लहू भेंट किया: ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले'' (गलातियों 4:4, 5)। यह लेपालक या गोद लेना उस समय होता है जब हम मसीह की देह अर्थात कलीसिया बनते हैं। पौलुस ने कहा, ''[परमेश्वर] ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले *उस में* चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों'' (इफिसियों 1:4, 5)। अन्य शब्दों में, समय की सृष्टि से भी पहले परमेश्वर ने ठहरा दिया था कि वह उन्हें जो मसीह में आएंगे और विश्वासी होकर उसकी देह में रहेंगे, उन्हें अपनी संतान बनाकर अनन्तकाल के लिए उनका उद्धार करके गोद ले लेगा अर्थात लेपालक बना लेगा। कलीसिया को इस तरह देखकर इसे

केवल परमेश्वर की योजना, अर्थात संसार के लिए उसके अनुग्रहकारी नमूने के रूप में ही समझा जा सकता है।

बाइबल के एक विज़्यात शिक्षक, आर. सी. बेल ने *स्टडीज़ इन इफिसियंस* नामक अपनी पुस्तक में लिखा है, ''किसी के लिए भी सचमुच अनुग्रह से उद्धार को समझाने वाली किसी कलीसिया की अनिवार्यता को कम करना कठिन होगा।''[1] पवित्र शास्त्र में कलीसिया को एक ऐसे संगठन के रूप में नहीं दिखाया गया है जो उद्धार की परमेश्वर की योजना के आगे या पीछे आता हो, बल्कि इसे उद्धार की परमेश्वर की वास्तविक योजना के रूप में दिखाया गया है, ज़्योंकि यीशु के लहू के द्वारा मसीह की देह में ही हम छुटकारा पाए हुए लोगों के रूप में परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं। यदि हम उसकी संतान हैं तो उसकी कलीसिया हैं। बिना उसकी कलीसिया बने हम उसकी संतान नहीं बन सकते, और बिना उसकी संतान बने हम उसकी कलीसिया भी नहीं बन सकते। कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा अर्थात उद्देश्य से सज़्बन्धित नहीं बल्कि स्वयं परमेश्वर की सनातन मंशा है।

मान लो कि आप अपने किसी मित्र के पास उससे मिलने गए हैं और थोड़ी देर तक उसके खेत में घूमते हैं, जो आप जानते हैं कि उसे बहुत प्रिय है। लहलहाती हुई हरी भरी चरागाह में से गुज़रते हुए, वह आपको बताता है कि बचपन से ही उसका सपना था कि यह खेत उसे मिल जाए। फिर वह बताता है कि उसने अपना यह सपना कई साल पहले पूरा करना शुरू किया था, जब उसने इस भू-भाग को लेकर इसे सुन्दर उपजाऊ भूमि में बदलना शरू किया था। आपको अपने काम के लिए अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए बनाई गई इमारतों के बारे में बताते हुए आपको उसके चेहरे की चमक देख सकते हैं और उसके स्वर में गर्व को समझ सकते हैं। वह आपको अपने मवेशियों को दिखाता है जिन्हें उसने सावधानीपूर्वक चुना, उन्हें सुधारा और बहुत बड़ा झुंड बना दिया है। आशावाद और उत्सुकता से वह अपने खेत के लिए भावी योजनाएं बताता है।

इस वार्तालाप के बाद, आपको कोई संदेह नहीं रहेगा कि यह आदमी जीवनभर ज़्या करता रहा। जो कुछ भी उसने किया और आपको बताया उससे आपको पता चल गया कि वह अपने खेत के लिए कितना परिश्रम करता है और उससे कितना लगाव रखता है। यह उसके जीवन भर की कमाई है। जितनी शज़्ति, जितना धन उसने इस पर लगाया है और जो उसकी योजनाएं हैं, उनसे पता चलता है कि यह खेत उसकी महत्वाकांक्षाओं का सार है। उसकी हर बात इसी सच्चाई की ओर ध्यान दिलाती है कि इस खेत में उसके प्राण हैं।

यही अवलोकन परमेश्वर के विषय में भी किया जाना चाहिए। यह तथ्य कि कलीसिया समय के प्रारज़्भ से उसकी योजना थी, कि यह उद्धार के इतिहास के पुराने नियम के लज़्बे काल की भविष्यवाणी के दौरान मुज़्यबिन्दु थी और यह कि यह पृथ्वी पर हमारे प्रज़ु की सेवकाई और क्रूस पर उसकी मृत्यु का परिणाम था इस बात को प्रमाणित करता है कि संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की सबसे बड़ी योजना मसीह और उसकी कलीसिया है। मानवीय इतिहास से पहले, कलीसिया को अस्तित्व में लाना परमेश्वर की परोपकारी इच्छा थी; अब जबकि उसने उस इच्छा को वास्तविकता बना दिया है, कलीसिया का विकास और

विस्तार संसार में उसका जारी रहने वाला काम है।

किसी ने कहा है, ''जीवन का काम यह ढूंढ़ना ही है कि परमेश्वर किस ओर जा रहा है और हम भी उसी दिशा में अपने आप को ले जाएं।'' यदि हम परमेश्वर की सनातन मंशा को समझ जाएं कि यह ज़्या है और वह इसे कैसे पूरा कर रहा है, तो हम इस बात को ध्यान में रखेंगे कि परमेश्वर किस ओर जा रहा है और वह यह कि हम में और संसार में ज़्या करना चाहता है। इफिसियों 3:10, 11 में बताकर कि कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा का पूरा होना है पौलुस ने हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने का अचूक ढंग बता दिया। एकमात्र ढंग जो इस बात को सुनिश्चित करता है कि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चल रहे हैं यही है कि हम उसकी कलीसिया बन रहे हैं, उसकी कलीसिया बनकर विश्वास में चल रहे हैं और उसकी कलीसिया के रूप में उसकी महिमा कर रहे हैं।

इसमें महत्व का सुझाव है

इसके अलावा, परमेश्वर की ''उस सनातन मंशा'' के रूप में कलीसिया की धारणा से हमें कलीसिया के पवित्र महत्व का पता चलता है। यदि कलीसिया परमेश्वर की ईश्वरीय परिकल्पना की अभिव्यज़्ति है, तो विचार करें कि परमेश्वर के लिए कलीसिया का महत्व कितना होगा!

कलीसिया के अस्तित्व को मसीह के क्रूस से अलग करके न तो समझा जा सकता है और न ही उसका महत्व बताया जा सकता है।[2] परमेश्वर के पुत्र यीशु की मृत्यु ही वह आधार है जिस पर कलीसिया टिकी है और जिस में से यह बढ़ती है। परमेश्वर, जो अनुग्रह में धनी है, ने क्रूस में से कलीसिया बनाने की योजना तैयार करने (इफिसियों 2:4, 5), कलीसिया को बनाए रखने (1 यूहन्ना 1:7), और कलीसिया को सेवा देने (2 कुरिन्थियों 5:18, 19) की योजना बनाई। इसलिए हम मसीह की मृत्यु का (में) बपतिस्मा लेकर उसकी देह में प्रवेश करते हैं (रोमियों 6:3); और उस देह के विश्वासी अंगों या सदस्यों के रूप में उसके वचन के प्रकाश में चलते रहकर, निरन्तर उसके लहू से शुद्ध किए जाते हैं। इसलिए, नये नियम की कलीसिया लोगों (स्थानीय अगुओं की अगुआई में) का एक समूह है जो मसीह के लहू के द्वारा उसकी आत्मिक देह में आए हैं और उस देह के रूप में परमेश्वर के आत्मा और मसीह की सामर्थ से सामर्थ और शज़्ति पाकर चल रहे हैं, काम कर रहे हैं और आराधना कर रहे हैं। संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की यही योजना है।

जो कोई नये नियम की कलीसिया से बाहर है वह परमेश्वर की सनातन मंशा से बाहर है, और जो कोई परमेश्वर की सनातन मंशा से बाहर है वह छुटकारे के लिए परमेश्वर के काम से बाहर है। कलीसिया के सज़्बन्ध में इस सच्चाई में दो मुज़्य सच्चाइयां हैं। (1) मनुष्य के उद्धार के लिए परमेश्वर संसार में कार्य कर रहा है। वह छुटकारे की अपनी योजना को लागू करने में व्यस्त है जिसे उसने संसार के प्रारज़्भ होने से पहले चाहा था और उसे बढ़ाया, अपनी अगुआई दी और संसार के कोने-कोने में आशीष दी है। यह मनुष्य के लिए परमेश्वर

के महान प्रेम से उपजा और उसका ठहराया हुआ कार्य है जिसे पौलुस ने उसकी ''उस सनातन मंशा'' (इफिसियों 3:11) कहा। (2) नये नियम की कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा या अनन्त उद्देश्य का ढंग, रूप और वास्तविकता है।

उद्धार के लिए परमेश्वर के ढंग की तुलना विवाह से की जा सकती है। परिवार और उसके बढ़ने के लिए परमेश्वर की एक योजना है। वह योजना ज़्या है? इसका जवाब हम सब जानते हैं: यह योजना विवाह ही है। पवित्र शास्त्र की स्पष्ट शिक्षा के आधार पर हम कह सकते हैं कि परिवार के लिए परमेश्वर की सनातन मंशा यह है कि पुरुष और स्त्री उसकी व्यवस्था में रहते हुए पति और पत्नी के रूप में आनन्द से रहें। पुरुष तथा स्त्री की सृष्टि के समय परमेश्वर ने उन्हें विवाह तथा संसार में बच्चे लाने की अपनी योजना बता दी थी। ज़्या संसार में वैध विवाह के बिना बच्चों को जन्म दिया जा सकता है? हां। ज़्या लोग वैध विवाह से बाहर रहकर आनन्द और संतोष ढूंढ़ते हैं? हां। लेकिन जहां ऐसा होता है तो स्पष्ट है वहां परमेश्वर की इच्छा को नज़रअन्दाज किया गया है, बच्चे जनने और परिवार को प्रसन्न करने के लिए उसकी इच्छा को नकार दिया गया है। ज़्या बच्चे के लिए या माता-पिता के लिए अच्छा यही है कि बच्चा ऐसे घर में रहे जो परमेश्वर का ठहराया हुआ न हो? नहीं। ज़्यों? ज़्योंकि वे समाज और व्यज़्तिगत प्रसन्नता के लिए परमेश्वर की योजना से दूर हो गए हैं!

मानवीय इतिहास से पूर्व,
कलीसिया को अस्तित्व में लाना
परमेश्वर की परोपकारी इच्छा थी!
अब ... संसार में कलीसिया का विकास
और विस्तार उसका काम है।

संसार के उद्धार के लिए नये नियम की कलीसिया परमेश्वर की योजना है। उसकी यही एकमात्र योजना है। यदि हम नये नियम की कलीसिया की अनदेखी करें तो ज़्या होगा? ज़्या हम किसी धार्मिक संगठन में धार्मिक कार्य कर सकते हैं जो सच्ची कलीसिया न हो? हां। ज़्या हम कलीसिया से दूर और अलग होकर विश्वासी लोगों की मण्डली के रूप में करुणा के अद्‌भुत कार्य कर सकते हैं? हां। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि ''ज़्या हम परमेश्वर की सनातन मंशा को पूरा कर रहे हैं?'' पवित्र शास्त्र के अनुसार तो इसका उज़र है कि ''नहीं।'' ज़्या हम परमेश्वर की सनातन मंशा के बाहर परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सकते हैं? उज़र फिर है कि ''नहीं।''

ज़्योंकि यह सत्य है कि हम परमेश्वर की ''उस सनातन मंशा'' को पूरा होते केवल मसीह की देह अर्थात नये नियम की कलीसिया के रूप में ही देखते हैं, इसका अर्थ यह हुआ कि हमें तब तक चैन से नहीं बैठना चाहिए जब तक हम कलीसिया नहीं बन जाते। प्रभु की कलीसिया बनकर हम परमेश्वर द्वारा संसार को मिलने के लिए उसके अनुग्रहकारी नमूने में आ जाते हैं।

इसमें स्थायित्व का पता चलता है

इसके अलावा इस तथ्य में कि कलीसिया परमेश्वर की ''सनातन मंशा'' है, मसीह के सदा निष्कलंक होने का ऐलान है। कलीसिया राज्य का विकल्प नहीं है कि मनुष्य की आवश्यकता के लिए उसके स्थान पर कोई और अच्छी व्यवस्था आ जाने पर उसे बदल दिया जाएगा। यह कोई *ऐसी* योजना नहीं है जिसका स्थान कोई *दूसरी* योजना ले सके।

कलीसिया मसीही युग के लिए परमेश्वर की योजना है। पौलुस कहता है, ''कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (इफिसियों 3:21)। कलीसिया की स्थापना परमेश्वर के राज्य के रूप में हुई थी (दानिय्येल 2:44; मत्ती 16:18), जो पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य है जिसका आनन्द हम अब उसके परिवार के रूप में लेते हैं और जिसका आनन्द पूर्ण रूप से तब लेंगे जब उसकी महिमा में प्रवेश करेंगे (2 पतरस 1:11)।

अपने आत्मिक राज्य को कलीसिया के रूप में संसार में लाने के लिए परमेश्वर को कई वर्ष तक तैयारी करनी पड़ी थी। प्रतिज्ञा किए हुए मसीह की पहली झलक उत्पत्ति 3:15 में मिलती है, जहां शैतान पर विजय का संकेत देकर भविष्यवाणी की गई थी। बाद में, पुरखाओं के युग में, अब्राहम के साथ मसीहा से सम्बन्धित एक विशेष प्रतिज्ञा की गई थी कि ''भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे'' (उत्पत्ति 12:3; तु. 13:15; गलतियों 3:16)। मूसा की व्यवस्था परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दी प्रतिज्ञा और यीशु में उस प्रतिज्ञा के पूरा होने के बीच के समय में दी गई थी (गलतियों 3:19)। जिससे पुरखाओं के युग और मूसा के युग से मसीह के आने और उसके राज्य की स्थापना के लिए आवश्यक तैयारी का समय मिल गया। अपनी निजी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपनी शिक्षाओं के द्वारा, बारह प्रेरितों को सिखाकर, अपना नमूना देकर, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा और जी उठने के बाद दर्शन देते रहकर मसीह के आने और राज्य की नींव रखी।

प्रेरितों 2 अध्याय के अनुसार कलीसिया की स्थापना के समय पिन्तेकुस्त के दिन राज्य सामर्थ के साथ आया था (देखिए मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:8)। मसीही लोगों को मसीह की देह के अंगों के रूप में देखकर हम उन्हें कलीसिया के रूप में पहचानते हैं; मसीही लोगों को परमेश्वर के राज्य के प्रति समर्पित लोगों के रूप में देखकर हम उन्हें परमेश्वर के राज्य के रूप में देखते हैं। कलीसिया जो मसीह की आत्मिक देह है, वह पवित्र योजना है जिसका नज़्शा परमेश्वर ने आदम को बनाने से पहले तैयार कर लिया था।

पौलुस के अनुसार अब स्वर्गदूत केवल कलीसिया के द्वारा ही परमेश्वर की बुद्धि और वर्षों से तैयार की जा रही योजना को देख सकते हैं। पौलुस ने लिखा है, ''ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए'' (इफिसियों 3:10)। ''प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं'' अवश्य ही स्वर्गदूतों के लिए कहा गया है। वे चाहे कहीं से भी ज़्यों न हों, मसीह की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया को देख सकते हैं और कह सकते हैं, ''अब हमने देख लिया है। अब हमें समझ आ गई है। अन्ततः अब यह स्पष्ट हो गया है कि

परमेश्वर इतने सालों से किस उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम कर रहा था। अन्त में हम उसकी सनातन मंशा को पूरा होते देखते हैं।'' स्वर्गदूतों को नहीं पता कि छुटकारा ज़्या होता है, ज़्योंकि उन्हें छुटकारा मिला ही नहीं है (1 पतरस 2:4)। शायद परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई पतरस की बात का भी यही अर्थ है: ''उन पर प्रगट किया गया, कि वे अपनी नहीं बरन तुज़्हारी सेवा के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुज़्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुज़्हें सुसमाचार सुनाया, और *इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं* '' (1 पतरस 1:12)।

हार्डिंग यूनिवर्सिटी में मैं अपने छात्रों को याद दिलाता रहता हूं कि स्वर्गदूतों की नज़र उन पर रहती है। मैं उन्हें कहता हूं, ''जब आप, अर्थात मसीही लोग, हमारे कैज़्पस में घूमते हो, पृथ्वी पर मसीह की आत्मिक देह के रूप में उसके लिए जीवन बिताते हो, तो स्वर्गदूत आपको देखकर कहते हैं, 'हां, अब हमें पता चला कि मसीही होने का ज़्या अर्थ है। अब हमें समझ आई कि परमेश्वर की योजना ज़्या है।' '' हो सकता है कि पृथ्वी पर रहने वाले अर्थात दूसरे लोग जो मसीही नहीं हैं वे भी हमें देखकर कहते हों, ''परमेश्वर के वचन से ऐसा ही जीवन बन जाता है। यदि मुझे ऐसा जीवन चाहिए तो मुझे भी इसे पाने के लिए छुटकारा देने के परमेश्वर के ढंग को मानना होगा।''

मसीह की देह में ही हम परमेश्वर की सनातन मंशा में अर्थात उस योजना में होते हैं जो संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की अन्तिम इच्छा थी और जो अनन्तकाल में स्वर्ग के अनन्त राज्य में हमारे उठा लिए जाने के समय पूरी होगी (2 परतस 1:10, 11)। उसकी कलीसिया दो संसारों में रहती है: पृथ्वी पर यह वर्तमान राज्य है (कुलुस्सियों 1:13), और आने वाला स्वर्गीय राज्य है (2 तीमुथियुस 4:1)। इसमें कोई हैरानगी की बात नहीं कि इब्रानियों की पत्री के लेखक में इसे एक ऐसा राज्य कहा ''जो हिलने का नहीं'' (इब्रानियों 12:27)।

सारांश

फिर तो पवित्र शास्त्र के अनुसार कलीसिया ही परमेश्वर के उद्देश्य अर्थात मंशा वाले लोग हैं। मसीह की आत्मिक देह के द्वारा मनुष्य को उद्धार देने की यह परमेश्वर की उदार योजना थी। प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया की स्थापना में, उसका पवित्र उद्देश्य पता चल गया था।

''उस सनातन मंशा'' वाज़्यांश से अभिप्राय है कि कलीसिया संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की परिकल्पना और निश्चय है। परमेश्वर की सनातन मंशा अर्थात अनन्त उद्देश्य होने के कारण यह महत्वपूर्ण है और सदा तक रहने वाली है।

संसार तथा मनुष्य के सृष्टिकर्ज़ा के रूप में परमेश्वर इन सब सच्चाइयों में सबसे बड़ी सच्चाई है। जो कुछ भी है उसका वर्गीकरण या तो परमेश्वर या परमेश्वर नहीं के रूप में किया जा सकता है अर्थात परमेश्वर है, और फिर ऐसी चीज़ें और प्राणी हैं जिन्हें परमेश्वर ने बनाया। जो कुछ भी अस्तित्व में है उसे दो वर्गों में बांटा जाता है। इन दो वर्गों पर विचार करने से हमें

परमेश्वर के बनाए संसार में अपना स्थान देखने और सृष्टि में परमेश्वर की सामर्थ और श्रेष्ठता देखने में सहायता मिलती है। हम सृष्टि हैं और परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, सर्वव्यापक और अनादि है। उसकी संगति से बाहर रहना किसी भी मनुष्य की सबसे बड़ी गलती होगी। यह विपरीत बात भी सत्य है: उसकी इच्छा के साथ मिलने का अर्थ उसके साथ मिलना और ईश्वरीय आशा और अनन्त उद्देश्य या सनातन मंशा से परिपूर्ण होना है।

मसीह की आत्मिक देह से बाहर रहने वाला व्यक्ति उसकी सनातन मंशा से बाहर है। इसलिए अपने जीवन और भविष्य के प्रति गंभीरता से विचार करने वाले के लिए मसीह की देह में प्रवेश करना सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

आइए सुनते हैं कि यीशु ज़्या कहता है, ''मैं तुझ से सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 3:5)।

आत्मा की पुकार की ओर ध्यान दें, ''और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंत मेंत ले'' (प्रकाशितवाज़्य 22:17)।

फिर, मसीह की कलीसिया बन जाने के बाद, जीवन भर अपने मन को पौलुस के शज़्दों में लगाए रखें: ''जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए'' (इफिसियों 5:25, 26)।

जब तक कोई परमेश्वर की सनातन मंशा में रहकर जीवन नहीं बिताता तब तक वह इस संसार में जीने के लिए परमेश्वर की मंशा को पूरा नहीं कर रहा। ज़्या आप उसकी मंशा अर्थात उद्देश्य वाले लोगों में से एक हैं ?

पाद टिप्पणियां

[1]आर. सी. बेल, स्टडीज़ इन इफिसियंस (ऑस्टिन, टैज़्सस: फर्म फाउंडेशन पज़्लिशिंग कं. 1971), 16. [2]जेज़्स डी. बेल्स ने इस सच्चाई की ओर ध्यान दिलाया है। देखें जेज़्स डी. बेल्स, द क्रॉस एण्ड द चर्च (श्रेवकोट, ला.: लैज़्बर्ट बुक हाउस, पृ.न.)। जे. डी. थॉमस, सं., गॉड'स अटरनल परपज़, अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज लैज़्चरस (अबिलेन, टैज़्सस: अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज बुक स्टोर, 1969) भी देखें।

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. ''उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार'' वाक्यांश की व्याख्या करें। देखिए इफिसियों 1:7.
2. ''परमेश्वर की उस सनातन मंशा'' वाक्यांश के अर्थ पर चर्चा करें। पढ़ें इफिसियों 3:11.
3. क्या परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु संसार की नींव रखने से पहले ही ठहरा दी थी? यदि हां, तो क्यों?
4. ''जब समय पूरा हुआ'' वाक्यांश का क्या अर्थ है?
5. क्या कलीसिया को परमेश्वर की योजना में बाद में जोड़ा गया, या यह परमेश्वर की योजना ही है? समझाएं।
6. यदि कलीसिया परमेश्वर की संतान है, तो उसकी कलीसिया बने बिना क्या परमेश्वर की संतान बना जा सकता है?
7. इस बात की व्याख्या करें कि कलीसिया को क्रूस के द्वारा अस्तित्व में कैसे लाया गया?
8. यदि कोई कलीसिया से बाहर है, तो क्या वह परमेश्वर की सनातन मंशा से भी बाहर है?
9. इस विचार से कि कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा है किन दो सच्चाइयों का पता चलता है?
10. क्या कलीसिया से बाहर रहकर कोई धार्मिक कार्य कर सकता है? यदि वह करता है तो क्या वह परमेश्वर की सनातन मंशा का भाग है?
11. कलीसिया के द्वारा हम परमेश्वर की महिमा कैसे करते हैं? देखिए इफिसियों 3:20.
12. स्वर्गदूतों को प्रभु की अनन्त योजना के पूरी तरह से आने की समझ कैसे आती है? देखिए इफिसियों 3:10, 11.
13. मसीह की देह अर्थात कलीसिया में कैसे प्रवेश किया जाता है?